दिव्यांग व्यक्तियों के सशक्तिकरण के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार, 2022 के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार विजेताओं की सूची (श्रेणीवार): –

(व्यक्तिगत उत्कृष्टता के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार–2022)

No.	सर्वश्रेष्ठ दिव्यांगजन		
1		डॉ. पोट्टाबथिनी पद्मावती	51 वर्षीय डॉ. पोट्टाबथिनी पद्मावती को 90% लोकोमोटर दिव्यांगता है। उन्होंने बीए पीजीडीसीए किया है। उन्होंने हैदराबाद में कर्नाटक संगीत, सुगम संगीत और पौराणिक नाटक या संगीत नाटक में गायन का प्रशिक्षण लिया और एक कलाकार बन गईं। एक सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में उन्होंने दिव्यांग व्यक्तियों को गायन, अभिनय, नृत्य और साथ ही कंप्यूटर, सिलाई, मोमबत्ती बनाने और सॉफ्ट टॉयज का निःशुल्क प्रशिक्षण देने के लिए पद्मावती संस्थान की शुरुआत की। उनका एनजीओ पिछले 20 वर्षों से दिव्यांग व्यक्तियों को 'स्फूर्ति पुरस्कार' देता है। उन्होंने दूरदर्शन के लिए एक टेलीफिल्म बनाई जिसने जापान में एक मिनी पुरस्कार जीता। उन्हें दो बार राष्ट्रीय पुरस्कार और दो बार राज्य पुरस्कार मिला और 2010 में उन्हें स्त्रीशक्ति पुरस्कार मिला।
2		डॉ. नीलिमा ढींगरा पासी	डॉ. नीलिमा ढींगरा पासी, वृद्ध, 60% लोकोमोटर दिव्यांगता से पीड़ित हैं। उन्होंने पीएचडी (फार्मास्युटिकल केमिस्ट्री) की है, और पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ में सहायक प्रोफेसर हैं। एक औषधीय या फार्मास्युटिकल केमिस्ट होने के नाते, उन्होंने नई दवा के अणुओं (रासायनिक संस्थाओं) को डिजाइन और संश्लेषित किया है। डॉ. नीलिमा ढींगरा पासी ने पाँच अल्फा रीएजुकेट्स अवरोधक विकसित किए हैं जो कि सौम्य प्रोस्टेटिक हाइपरप्लासिया के उपचार में चिकित्सकीय रूप से उपयोगी हैं। बाजार में बिकने वाली दवा फिनास्टराइड की तुलना में अधिक शक्तिशाली नए स्टेरॉयड 5-रिडक्टेस अवरोधक प्रदान करने के लिए उनके द्वारा योगदान दिया गया है, जिसके परिणामस्वरूप 8 पेटेंट और भारत वासुदेवन पुरस्कार

			और भारत रतन मदर टेरेसा गोल्ड मेडलिस्ट पुरस्कार जैसे राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त करने के रूप में उत्साहजनक परिणाम मिले हैं। उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर 2 पुस्तकें लिखी हैं और राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय प्रकाशनों के लिए 60 से अधिक अध्यायों का योगदान दिया है। उन्होंने राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दोनों स्तरों पर 60 से अधिक सार भी प्रस्तुत किए हैं। उन्होंने चंडीगढ़ विश्वविद्यालय में दिव्यांगजनों के लिए समान अवसर प्रकोष्ठ में सह-समन्वयक तथा विभागीय स्तर पर UIPS अवधारणा टीम में सह-समन्वयक के रूप में कार्य किया है।
3		सुश्री एम पून्गुयली	सुश्री एम पून्गुयली , उम्र 29 वर्ष, 75% बौद्धिक दिव्यांगता से पीड़ित हैं। वह एक दिव्यांग भरतनाट्यम नर्तकी हैं। उन्होंने अपना अरंगेत्रम पूरा कर लिया है। उन्होंने 2019 में 7190 प्रतिभागियों के बीच थिल्लई नाट्यंजलि में भाग लिया था, जिसने गिनीज रिकॉर्ड बनाया था। उन्होंने राज्य, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रदर्शन किया है और कई पुरस्कार, पुरस्कार और प्रशंसाएँ प्राप्त की हैं।
4	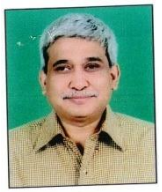	प्रोफ़ेसर सोमेश्वर सती	54 वर्षीय प्रो. सोमेश्वर सती को 100% दृष्टि दोष है। उन्होंने अंग्रेजी भाषा में पीएचडी की है। उन्होंने कॉलेज की सक्षम इकाई में रीडिंग और स्क्राइब सेवा की स्थापना की है और दिल्ली विश्वविद्यालय के किरोड़ीमल कॉलेज में दिव्यांगता अनुसंधान और प्रशिक्षण के लिए एक केंद्र स्थापित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। वे दिव्यांग छात्रों के लिए खेल/सांस्कृतिक गतिविधियों, जागरूकता कार्यक्रमों के आयोजन में शामिल हैं। उन्होंने दिव्यांगता अध्ययन में ऑनलाइन सर्टिफिकेट कोर्स और राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय वेबिनार और संकाय विकास कार्यक्रम भी आयोजित किए हैं और दिव्यांगता से संबंधित विभिन्न पुस्तकों का अंग्रेजी में अनुवाद भी करवाया है। 2019 में, उन्होंने देश भर के दिव्यांगता विद्वानों के एक संघ, भारतीय दिव्यांगता अध्ययन सामूहिक (IDSC) की स्थापना की।

5		श्री अपूर्व कुलकर्णी	श्री अपूर्व कुलकर्णी, 36 वर्ष के हैं और 7 वर्ष की आयु से ही उन्हें 100% दृष्टि दोष है। वे वर्तमान में ओला मोबिलिटी इंस्टीट्यूट (ओएमआई) के समावेशी गतिशीलता केंद्र का नेतृत्व कर रहे हैं – जो एएनआई टेक्नोलॉजीज प्राइवेट लिमिटेड (ओला और ओला कैब्स ब्रांड के मालिक) का हिस्सा है। वे 23 करोड़ से अधिक दिव्यांगजनों, महिलाओं और वरिष्ठ नागरिकों के लिए शहरी परिवहन को अधिक समावेशी बनाने के लिए तकनीकी समाधान के लिए संयुक्त राष्ट्र (यूएन) भारत द्वारा आयोजित स्मार्ट सॉल्यूशंस चैलेंज और समावेशी शहर पुरस्कार 2022 के विजेता भी हैं। वे शोध और प्रकाशनों के माध्यम से दिव्यांगता समावेशन का समर्थन कर रहे हैं। उन्होंने 3 दिव्यांगता समूहों और 3 परिवहन साधनों में दिव्यांग महिलाओं और पुरुषों के यात्रा अनुभवों पर एक अग्रणी रिपोर्ट: 'ऑन द मूव' लिखी।
6		श्री जय सिंग कृष्णरावजी चव्हाण	श्री जयसिंह कृष्णराव चव्हाण 43 वर्ष के हैं और उन्हें 87% लोकोमोटर दिव्यांगताहै। वे एमबीए (वित्त) हैं। उन्होंने रंजना ग्रुप ऑफ़ इंडस्ट्रीज के तहत साबुन और डिटर्जेंट बनाकर अपना खुद का उद्यम शुरू किया। उन्होंने 2007 में सर्वश्रेष्ठ स्वरोजगार दिव्यांगजन की श्रेणी में राष्ट्रीय पुरस्कार जीता और दिव्यांग व्यक्तियों के सशक्तिकरण के लिए उन्हें 2016 में महाराष्ट्र उद्योग भूषण पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उन्होंने मैग्नेटिक महाराष्ट्र पुरस्कार (स्टार्ट-अप के लिए महाराष्ट्र राज्य पुरस्कार), 2018 भी जीता। वे दिव्यांगजनों के स्वरोजगार के लिए विशेष प्रशिक्षण शिविरों के आयोजन में शामिल रहे हैं।
श्रेष्ठ दिव्यांगजन			
7		सुश्री इंशा बशीर	सुश्री इंशा बशीर 32 वर्ष, बी.ए. और बी.एड. 12वीं कक्षा में पढ़ते समय दुर्घटना का शिकार होने के कारण 80% लोकोमोटर दिव्यांगतासे पीड़ित हैं। उन्होंने "101 अपरंपरागत रणनीतियाँ" नामक पुस्तक का

			सह-लेखन किया है। वह मार्च 2019 में कोच विजिटर स्पोर्ट्स प्रोग्राम के लिए अमेरिका में भारत का प्रतिनिधित्व करने वाली कश्मीर की पहली महिला व्हीलचेयर बास्केटबॉल खिलाड़ी हैं। उन्होंने 2019 में पंजाब के मोहाली में आयोजित राष्ट्रीय स्तर की बास्केटबॉल प्रतियोगिता में कश्मीर की महिला टीम की कप्तान के रूप में भी भाग लिया था। वह 2018 में तमिलनाडु में आयोजित राष्ट्रीय स्तर की बास्केटबॉल प्रतियोगिता के दौरान दिल्ली की टीम में भी खेली थीं। उन्होंने हैदराबाद में आयोजित राष्ट्रीय व्हीलचेयर बास्केटबॉल चैंपियनशिप 2017 में भी भाग लिया था।
8	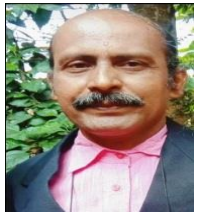	डॉ. सत्य नारायण मिश्रा	डॉ. सत्य नारायण मिश्रा, 54 वर्ष, 80% लोकोमोटर दिव्यांगतासे पीड़ित हैं, उन्होंने एम.फिल. किया है, तथा उत्कल विश्वविद्यालय से पीएचडी की है। वे डी.जी. एचीव्स, राष्ट्रीय अभिलेखागार के कार्यालय में एक पुरालेखपाल के रूप में कार्यरत हैं, तथा उन्हें 2012 में सेंट्रल चाइना नॉर्मल यूनिवर्सिटी, चीन से डी. लिट. की उपाधि प्राप्त हुई थी। उन्होंने विश्वविद्यालयों और संस्थानों के विभिन्न राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में दो पुस्तकें, 11 शोध लेख भी प्रकाशित किए हैं। उन्होंने उत्कल विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों और भवनों को विकलांगों के अनुकूल बनाने के लिए जोरदार प्रयास किए हैं। वे न्यूजीलैंड के एक दिव्यांगताट्रस्ट एलिवेट के सदस्य भी हैं।
9		सुश्री शर्मिष्ठा अत्रेजा	34 वर्षीय सुश्री शर्मिष्ठा अत्रेजा 100% दृष्टिबाधित हैं। उन्होंने दर्शनशास्त्र में स्नातकोत्तर की पढ़ाई पूरी की है। वह वर्तमान में दिल्ली विश्वविद्यालय, दर्शनशास्त्र विभाग में सहायक प्रोफेसर के रूप में कार्यरत हैं। उन्होंने लियोनार्ड चेशायर डिसेबिलिटी-यूके द्वारा समर्थित वैश्विक वकालत समूह 'यंग वॉयस' के दक्षिण-एशियाई अध्याय के संयोजक के रूप में भारत का प्रतिनिधित्व किया। उन्होंने ऑनलाइन प्रकाशित होने वाली द्वि-वार्षिक अंतरराष्ट्रीय पत्रिका "इंटरनेशनल जर्नल फॉर क्रिटिकल डिसेबिलिटी स्टडीज" के एसोसिएट एडिटर के रूप में काम किया है। उन्होंने 2016 में बैरियर-फ्री एसोसिएशन द्वारा

			आयोजित फुकुओका में 13वें गोल्ड कॉन्सर्ट में भारतीय संगीत गायन में प्रस्तुति दी। वह 2020 में एक ऑनलाइन अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में दिव्यांगताऔर दृष्टि पर एक संसाधन व्यक्ति भी थीं।
10		श्री अभिषेक ठाकुर	श्री अभिषेक ठाकुर 34 वर्ष, 100% दृष्टिबाधित हैं, दर्शनशास्त्र में परास्नातक हैं। वह वर्तमान में दिल्ली विश्वविद्यालय में शिक्षा विभाग में सहायक प्रोफेसर के रूप में कार्यरत हैं। वह वर्ष 2011 में TISS, मुंबई से सामाजिक कार्य में सर्वश्रेष्ठ फील्ड वर्क छात्र के लिए NTPC स्वर्ण पदक के प्राप्तकर्ता हैं। उन्होंने व्यापक रूप से शोध पत्र और लेख प्रकाशित किए हैं और साथ ही CBM के सहयोग से समुदाय आधारित पुनर्वास और सतत आजीविका ढांचे पर विभिन्न शोध परियोजनाओं को सफलतापूर्वक पूरा किया है। उन्होंने 2018 और 2019 में कुछ जॉब फेयर भी आयोजित किए हैं और साथ ही ब्लाइंड रिलीफ एसोसिएशन के सहयोग से दिव्यांग व्यक्तियों के लिए एक COVID-19 हेल्पलाइन भी चलाई है। वह दिल्ली सरकार के विभिन्न विभागों में दिव्यांग व्यक्तियों के लिए उपयुक्त पदों की पहचान के लिए एक विशेषज्ञ सदस्य हैं
11		सुश्री तेमसुतोला जमीर	सुश्री तेमसुतोला जमीर, 42 वर्ष की हैं और दीमापुर, नागालैंड की निवासी हैं। वह और उनके पति 100% श्रवण बाधित हैं। उन्होंने सीनियर सेकेंडरी किया है और वर्तमान में समग्र शिक्षा अभियान के तहत संसाधन शिक्षिका के रूप में काम कर रही हैं। बधिर बच्चों को घर पर ही शिक्षा प्रदान करती हैं जो स्कूल जाने में असमर्थ हैं। वह एक खिलाड़ी और नर्तकी हैं। उन्होंने शॉटपुट और बैडमिंटन में विभिन्न राष्ट्रीय स्तर और राज्य स्तर की प्रतियोगिताओं में प्रथम पुरस्कार जीते हैं। उन्होंने नई दिल्ली में एबिलिटी उत्सव 2000 में कविता में सांत्वना पुरस्कार प्राप्त किया है। युवा मामले और खेल मंत्रालय द्वारा आयोजित स्पेशल ओलंपिक भारत में, उन्होंने शॉटपुट में दूसरा पुरस्कार और 2012 और 2014 में बैडमिंटन में प्रथम पुरस्कार जीता। स्टैंडिंग लॉन्ग जंप प्रतियोगिता में उन्होंने 2011 में दूसरा पुरस्कार जीता

12		श्री बिजेन्द्र खटाना	25 वर्षीय श्री बिजेंद्र खटाना को 93% श्रवण दोष है। वे श्रवण दोष में विशेष शिक्षा में डिप्लोमा कर रहे हैं। वे एक खिलाड़ी हैं और उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर एथलेटिक्स, जूडो और बास्केटबॉल प्रतियोगिताओं में भाग लिया है। उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय बधिर बास्केटबॉल महासंघ द्वारा आयोजित बास्केटबॉल में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। राष्ट्रीय स्तर पर उन्होंने बास्केटबॉल में एक स्वर्ण पदक जीता है और जूडो में 73 किलोग्राम से कम भार वर्ग में तीसरा स्थान प्राप्त किया है।
13		सुश्री अपर्णा रॉय	सुश्री अपर्णा रॉय की उम्र 36 साल है और उनकी बौद्धिक दिव्यांगता50% है। हालाँकि वे औपचारिक शिक्षा में आगे नहीं बढ़ सकीं, लेकिन नृत्य में उन्होंने महारत हासिल की। उन्होंने शास्त्रीय मणिपुरी नृत्य सीखा। नृत्य में उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए उन्हें 2017 में रोल मॉडल की श्रेणी में राज्य पुरस्कार मिला। उन्होंने दिल्ली के DRDO ऑडिटोरियम सहित भारत के कई शहरों में भी प्रदर्शन किया है। उन्होंने वर्ष 2015 में बांग्लादेश में सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम में भी भाग लिया। लखनऊ में हार्ट एंड सोल कल्चरल सोसाइटी द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम में उन्हें 'स्टार, 2020' पुरस्कार मिला।
14		श्री रघुनाथ सिंह कुटलेहड़िया	श्री रघुनाथ सिंह कुटलेहरिया, उम्र 24 वर्ष, 50% बौद्धिक दिव्यांगताहोने के बावजूद 12वीं कक्षा उत्तीर्ण कर चुके हैं। वे एक खिलाड़ी हैं, और उन्होंने 2018 में रांची में आयोजित राष्ट्रीय साइकिलिंग चैंपियनशिप में स्वर्ण और रजत पदक जीता। उन्होंने मार्च, 2019 में अबू धाबी में आयोजित विश्व ग्रीष्मकालीन विशेष ओलंपिक में साइकिलिंग में 1 स्वर्ण और 1 रजत पदक जीता।
15		सुश्री पूजा गुप्ता	सुश्री पूजा गुप्ता 41 वर्ष की हैं और जन्म से ही उन्हें रक्त विकार के कारण 85% दिव्यांगताहै। उन्होंने एम.एस.सी. और एम.सी.ए. किया है। वह एच.सी.एल. टेक्नोलॉजीज लिमिटेड में सीनियर टेक्निकल लीड के पद पर कार्यरत हैं। वह सामाजिक कार्यों में भी शामिल हैं और कई रक्तदान शिविरों, अभियानों और थैलेसीमिया जागरूकता में

			वक्ता के रूप में भाग लेती हैं। उनके उत्कृष्ट कार्य के लिए उन्हें एशियन थैलेसीमिया वॉरियर अवार्ड, 2020, टाटा स्टील सबल रोल मॉडल, 2022 और उनके नियोक्ता सहित विभिन्न संगठनों द्वारा कई पुरस्कार दिए गए हैं।
16		श्री कृष्ण कुमार	श्री कृष्ण कुमार एम.पी. 53 वर्ष के हैं, उन्हें 40% क्रोनिक न्यूरोलॉजिकल कंडीशन है। उन्होंने SSLC, ITI किया है और वर्तमान में एंथूर में कन्वेक्शन काउंसलर के रूप में काम कर रहे हैं। उन्होंने करिन्कुटी संस्थान थेय्यम परफॉर्मर लोक नृत्य महोत्सव और शिल्प मेले, नई दिल्ली में प्रदर्शन किया है। उन्होंने आकाशवाणी कन्नूर के थोटमपट्टू में एक कलाकार के रूप में काम किया है। उन्होंने केरल में दिव्यांग लोगों की आपातकालीन प्रतिक्रिया क्षमताओं को मजबूत करने पर एक कार्यशाला में भी भाग लिया है। वह दक्षिण क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र तंजावूर में एक कलाकार भी हैं।
श्रेष्ठ दिव्यांगबाल /बालिका			
17		सुश्री श्रेया मिश्रा	16 वर्षीय सुश्री श्रेया मिश्रा 100% बौद्धिक दिव्यांगतासे पीड़ित हैं। वह बारहवीं कक्षा की छात्रा हैं और 2010 से शास्त्रीय नृत्यांगना (भरतनाट्यम) हैं तथा उन्होंने कुचिपुड़ी भी सीखी है। वह 2011 से ओडिशा और आंध्र प्रदेश में विभिन्न स्थानों पर मंचीय प्रस्तुतियाँ दे रही हैं। उन्होंने कोविड-19 के दौरान दुबई में वर्ष 2020 और 2021 में अंतर्राष्ट्रीय दिव्यांग दिवस के अवसर पर आयोजित 3 ऑनलाइन शास्त्रीय नृत्य प्रस्तुतियों में भी भाग लिया। उन्होंने राष्ट्रीय स्तर पर नाट्य उर्वशी और जिला स्तर पर नर्तन बाला पुरस्कार जैसे पुरस्कार जीते।
18		मास्टर अवनीश तिवारी	मास्टर अवनीश तिवारी 8 साल के हैं, जन्म से ही जन्मजात विकृतियों से पीड़ित बच्चे को उनके जैविक माता-पिता ने जन्म के बाद अनाथालय में छोड़ दिया था। 50% बौद्धिक रूप से दिव्यांग होने के कारण उन्हें एक अकेले माता-पिता ने गोद लिया था। मास्टर अवनीश ने 6 साल की उम्र से ही खेलों में अपने जुनून को पोषित करना

			शुरू कर दिया था। वह स्पेशल ओलंपिक भारत के एथलीट हैं। वह 7 साल की उम्र में माउंट एवरेस्ट बेस कैंप की ट्रैकिंग पर गए थे। दिव्यांग होने के बावजूद, इतनी कम उम्र में मास्टर अवनीश तिवारी की उपलब्धियाँ न केवल प्रशंसनीय हैं, बल्कि जन्मजात विकृतियों के साथ पैदा हुए लोगों के लिए प्रेरणादायी भी हैं।
दिव्यांगजनों के सशक्तिकरण के लिए कार्यरत सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति			
19		सुश्री पूजा सुरेशभाई वाघासिया	सुश्री पूजा सुरेशभाई वघासिया, एमएड. (विशेष शिक्षा) 43 वर्ष की हैं। मानसिक रूप से दिव्यांग बच्चों के लिए विशेष शिक्षक, उन्हें विशेष बच्चों को शिक्षित करने का 15 वर्षों का अनुभव है। वह बौद्धिक दिव्यांगतावाले एक बच्चे की माँ भी हैं। वह अपने एनजीओ प्रयास पैरेंट्स एसोसिएशन में 200 से अधिक विशेष बच्चों की देखभाल कर रही हैं। विशेष बच्चों के प्रति अपने समर्पित काम के कारण वह कई महिलाओं के लिए प्रेरणा हैं। उनका सपना न्यूनतम या बिना किसी शुल्क के 2000 विशेष बच्चों की माँ बनना है। उनके काम की गुजरात के विभिन्न अधिकारियों द्वारा भी सराहना की गई है।
20		श्री हरमनजीत सिंह	श्री हरमनजीत सिंह 47 वर्ष के हैं और एक व्यवसायी हैं। वे एक सामाजिक कार्यकर्ता भी हैं और पिछले 15 वर्षों से पंजाब (बटाला) में जन कल्याण चैरिटेबल सोसाइटी चला रहे हैं। वे दिव्यांगजनों के पुनर्वास और सहायक उपकरणों के वितरण में लगे हुए हैं। दिव्यांग व्यक्तियों के पुनर्वास के उनके काम के लिए, पंजाब सरकार ने 2016 में राज्य पुरस्कार से सम्मानित किया।
21	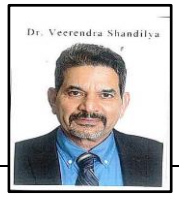	डॉ. वीरेंद्र शांडिल्य	डॉ. वीरेंद्र शांडिल्य 57 वर्षीय ऑर्थोटिस्ट और प्रोस्थेटिस्ट हैं। उन्होंने अपने पेटेंट किए गए एंडो-स्केलेटल प्रोस्थेटिक घुटने के जोड़ के डिजाइन के लिए प्रोस्थेटिक्स में डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की है, जो भारत में विकलांगों के लिए कम लागत और कार्यात्मक है। उन्होंने दुनिया भर में 4 लाख लाभार्थियों को ऑर्थोटिक और प्रोस्थेटिक लगाया

			है। वे एक निजी प्रोस्थेटिक और ऑर्थोटिक चिकित्सक होने के अलावा जया रिहैबिलिटेशन सेंटर, बिदादा में निदेशक के रूप में भी जुड़े हुए हैं। वे एक विषय विशेषज्ञ के रूप में ALMICO के आधुनिकीकरण परियोजना से भी जुड़े थे। वे दिव्यांगजनों को मैराथन में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करने के साथ-साथ शोध प्रमाणों के साथ प्रोस्थेटिक और ऑर्थोटिक में नवीन तरीकों को विकसित करने के लिए जाने जाते हैं, इसके अलावा वे कई कॉलेजों में अपने ज्ञान और नैदानिक विशेषज्ञता को साझा करने वाले शिक्षक और संकाय भी हैं।
22		डॉ. भाऊसाहेब अशोक बोत्रे	डॉ. भाऊसाहेब अशोक बोत्रे 44 वर्ष के हैं, लेकिन 100% लोकोमोटर दिव्यांगताके साथ, पीएचडी (इलेक्ट्रॉनिक्स) सीएसआईआर राजस्थान में प्रधान वैज्ञानिक के रूप में काम कर रहे हैं। डॉ. बोत्रे ने इलेक्ट्रिक के साथ-साथ हाथ से चलने वाले पैडल के साथ ई-असिस्ट ट्राई-साइकिल का एक प्रोटोटाइप विकसित किया है, जो ढलान वाली सड़कों, फ्लाईओवर, पहाड़ी क्षेत्रों में ब्रेकिंग और फॉरवर्ड और रिवर्स सिस्टम सर्किट में मदद करेगा। यह उत्पाद लागत प्रभावी है, यानी 25 ई-असिस्ट ट्राई साइकिल के एक बैच के लिए लगभग 30000 रुपये प्रति यूनिट, जबकि बाजार में इसकी कीमत 35000 रुपये प्रति यूनिट है। डॉ. बोत्रे ने दो पेटेंट और एक कॉपीराइट आवेदन प्रस्तुत किया है।

2. दिव्यांगव्यक्तियों को सशक्त बनाने में लगे संस्थानों के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार, 2022

दिव्यांग सशक्तिकरण पुरुष कार्यरत सर्व श्रेष्ठसंस्थान (निजी संस्थान, एनजीओ)		
1	महात्मा गांधी सेवा संघ	यह संगठन वर्ष 1994 में विभिन्न दिव्यांग व्यक्तियों को सामाजिक, शैक्षिक और पुनर्वास सेवाएं और अधिकार प्रदान करने के लिए अस्तित्व में आया था। यह संगठन दिव्यांग व्यक्तियों के पुनर्वास और सशक्तिकरण के लिए महाराष्ट्र और गोवा पर ध्यान केंद्रित करते हुए पूरे भारत में काम करता है। इसके अलावा, इस विभाग द्वारा संगठन को महाराष्ट्र में 2008, 2009, 2011, 2018, 2019 और 2020 में 9 जिला दिव्यांगतापुनर्वास केंद्रों और गोवा में एक केंद्र के संबंध में कार्यान्वयन एजेंसी होने की जिम्मेदारी भी दी गई है।
दिव्यांग सशक्तिकरण के क्षेत्र में कार्यरत सर्वश्रेष्ठ संस्थान (निजी संस्थान, एनजीओ)		
2	बलवन्तराय मेहता विद्या भवन	बलवंतराय मेहता विद्या भवन अंगुरीदेवी शेरसिंह मेमोरियल अकादमी सीनियर सेकेंडरी स्कूल की स्थापना 1965 में हुई थी। यह स्कूल दिव्यांग बच्चों के लिए एक विशेष स्कूल चलाता है और समावेशी शिक्षा भी प्रदान करता है। इसने अब तक 5000 से अधिक दिव्यांग बच्चों को शिक्षा दी है। स्कूल में 3825 छात्र हैं, जिनमें से 3500 सामान्य छात्र हैं और 325 विशेष आवश्यकता वाले बच्चे हैं। स्कूल में दिव्यांग बच्चों को विभिन्न प्रकार के कौशल प्रदान करने के लिए एक व्यावसायिक केंद्र भी है। स्कूल को एकीकृत/समावेशी शिक्षा के क्षेत्र में 'मॉडल स्कूल' के रूप में सम्मानित किया गया है।
दिव्यांगजनो के लिए सर्वश्रेष्ठ नियोक्ता		
3	मेसर्स एक्सेंचर सॉल्यूशंस प्राइवेट लिमिटेड	एक्सेंचर सॉल्यूशंस प्राइवेट लिमिटेड अपनी वैश्विक व्यावसायिक सेवाओं में दृश्यमान और अदृश्य दिव्यांगतावाले लगभग 2000 व्यक्तियों को रोजगार देता है, जो इसके कार्यबल का 0.6% है। दिव्यांग व्यक्तियों को प्रौद्योगिकी और सॉफ्टवेयर से लेकर डिजाइन और वित्त तक 30 से अधिक विभिन्न भूमिकाओं में विभिन्न क्षेत्रों में रोजगार दिया जाता है। एक्सेंचर अपने व्यवसाय के लिए बुनियादी बातों को प्राथमिकता देकर अपने कामकाज में दिव्यांग व्यक्तियों को शामिल करते हुए उन्नति स्थापित करना जारी रख रहा है। परिणामस्वरूप, दिव्यांग व्यक्तियों की भर्ती में 50% की वृद्धि हुई है और उनकी उन्नति और प्रगति सुनिश्चित हुई है।

दिव्यांगजनों के लिए सर्व श्रेष्ठ प्लेसमेंट एजेंसी		
4	डॉ. रेड्डीज फाउंडेशन	डॉ. रेड्डीज फाउंडेशन (DRF) ने दिव्यांग व्यक्तियों के लिए GROW नामक एक प्रमुख कार्यक्रम विकसित किया है। यह कार्यक्रम कोर रोजगार कौशल में प्रशिक्षण प्रदान करता है, जिसमें शारीरिक, दृश्य, भाषण, बौद्धिक दिव्यांगताऔर ऑटिज्म आदि सहित 11 विभिन्न दिव्यांगताओं को शामिल किया गया है। अधिकांश प्रशिक्षण केंद्र गंभीर दिव्यांगतावाले लोगों को समायोजित करने के लिए सुलभ हैं। फाउंडेशन हर साल लगभग 6000 उम्मीदवारों को प्रशिक्षण दे रहा है। कार्यक्रम यह सुनिश्चित करता है कि प्रशिक्षित दिव्यांग व्यक्ति विभिन्न क्षेत्रों में प्रवेश स्तर की नौकरियों के लिए तैयार होंगे। GROW कार्यक्रम में अब तक 60% प्लेसमेंट दर है और औसत वेतन 10,000 रुपये प्रति माह है। स्नातकों के लिए बहुराष्ट्रीय कंपनियों के साथ प्लेसमेंट हासिल करने में सहायता के लिए उन्नत स्तर का प्रशिक्षण भी आयोजित किया जा रहा है।
सुगम्य भारत अभियान के कार्यान्वयन /बाधामुक्त वातावरण के सृजन में सर्वश्रेष्ठ राज्य/संघ राज्य क्षेत्र /जिला		
5	महाराष्ट्र राज्य	सुगम्य भारत अभियान के अंतर्गत महाराष्ट्र के चार प्रमुख शहरों में कुल 180 सरकारी इमारतों का एक्सेस ऑडिट किया गया है। कुल 180 इमारतों की पहचान की गई है, जिनमें से 142 इमारतों के संबंध में प्रस्ताव भेजे गए हैं। 137 इमारतों में रेट्रोफिटिंग का काम पूरा हो गया है। कुल निधि राशि 2167.38 लाख रुपये है, जिसमें से 1930.84 लाख रुपये की राशि का उपयोग प्रमाण पत्र केंद्र सरकार को भेजा गया है। शेष 38 में से 15 इमारतों की योजना और अनुमान प्रस्तुत किया गया है।
दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम/यूडीआईडी एवं दिव्यांग सशक्तिकरण की अन्य योजनाओं के कार्यान्वयन में सर्वश्रेष्ठ राज्य / संघ राज्य क्षेत्र /जिला		
6	जिला प्रशासन – अलवर	जिला प्रशासन अलवर सरकार की विभिन्न योजनाओं के तहत जरूरतमंद दिव्यांग व्यक्तियों की पहचान करने के उद्देश्य से "सक्षम–अलवर अभियान" यानी घर–घर जाकर सर्वेक्षण चला रहा है। अप्रैल से मई 2022 के दौरान जिले में ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में 22 स्थानों पर सर्वेक्षण शिविर आयोजित किए गए और 20,000 से अधिक दिव्यांग व्यक्तियों की पहचान की गई। योजनाओं के तहत 26198 यूडीआईडी कार्ड, 27717 दिव्यांगताप्रमाण पत्र, 29328 दिव्यांग पेंशनभोगी, 3833 एसएपी छात्र, 3752

		एसएपी पालनहार, 1296 एसएपी परिवार, आस्था कार्ड, 1501 बस पास, एडीआईपी योजना के तहत 1685 लाभार्थी और दिव्यांगजनों को 149 कृत्रिम अंग वितरित किए गए। दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए ब्रेल प्रशिक्षण कार्यक्रम के अलावा विशेष रूप से सक्षम व्यक्तियों के लिए परिचयात्मक समारोह और विवाह समारोह का भी आयोजन किया गया।
दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016 के अपने राज्य में कार्यान्वयन में सर्वश्रेष्ठ राज्य दिव्यांगजन आयुक्त		
7	हरियाणा के दिव्यांगजन कल्याण राज्य आयुक्त	राज्य आयुक्त, दिव्यांगजन कार्यालय, दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016 के तहत दिए गए अधिदेश को लागू करने में उत्कृष्ट कार्य कर रहा है। हरियाणा राज्य में दिव्यांगजनों की शिकायतों के समाधान और उनके अधिकारों की सुरक्षा के लिए राज्य आयुक्त, दिव्यांगजन कार्यालय द्वारा उठाए गए स्वप्रेरणा से उठाए गए अभिनव और प्रभावी कदम सराहनीय हैं।